रात्रीक्लास ओमशांति 3.1.68

बच्चों को यह(ल.ना.) देखने से ही बाप और वर्सा याद आना चाहिए। जानते भी हैं बाप के पास बैठे यह वर्सा ले रहे हैं। दूसरा कुछ याद नहीं करना है। बाप को याद करना और विश्व का वर्सा पाना है। तकलीफ कुछ भी नहीं। अन्तर्मुख हो बाप और वर्सा को याद करना है। यह भी चांस पहले मिलता है गरीबों को। साहुकार नामी–ग्रामी अभी आ जाये तो रिवोल्यूशन हो जावे। अभी कोई 10/20 लाख की आसामी आय नहीं सकेंगे। न नामी–ग्रामी सन्यासी ही आवेंगे। नामी–ग्रामी का तो आवाज़ झट फैल जाता है ;परंतु ड्रामाप्लैनअनुसार यह पिछाड़ी में होगा। जो प्रजा में चले जाए। पिछाड़ी`मं ऐसे ही जरूर नहीं रहती है। इसलिए गरीबों को चांस अच्छा है। नामी–ग्रामी अभी नहीं आवेंगे। अभी साधारण अबलायें ही आवेंगे। तुम अपना वर्सा पाय रहे हो। पिछाड़ी को राजाई का वर्सा मुश्किल पा सकेंगे। तो बच्चों को पुरुषार्थ करना चाहिए। बाप है भी गरीब निवाज़। भारत भी गरीब है इसलिए कल्प2 भारत में ही आता हूं। पहले2 गरीब साधारण ही उठाते हैं। साहुकार लोग समझते हैं हमारे लिए यहां ही स्वर्ग है। तुम जो बहुत साहुकार थे सो अब नीचे आ गए हो। बेगर अर्थात् जिसके पास कुछ भी नहीं है। बाबा के पास कुछ है? ब्रह्मा की कोई चीज नहीं। तुम सब कुछ शिवबाबा को देते हो। शिवबाबा का ही है। मेरा जो कुछ था सो सब खलास कर दिया। मेरे को कोई देता नहीं है। शिवबाबा की चीज है। वह दाता है। मेरा क्या है? मैं भी तो ट्रस्टी हूं। बच्चों की वस्तु बच्चों के ही काम में लगाई जाती है। बाप अपना धन बच्चों पर कुर्बान करते हैं ना। बहुत ही समझने की बातें हैं। बाप भी है, वर्सा भी है तो जरूर हमको पावन बनना है। बड़ी बात नहीं। बहुत ही सहज है। युद्ध भी इसमें ही है। याद की यात्रा ही घड़ी2 भूल जाते हैं। नालेज की लड़ाई नहीं होती। याद में ही लड़ाई चलती है। तुम याद करना चाहते हो बाबा को। वह समझती है मेरा ग्राहक जाता है तो खैंचने की कोशिश करती है। यह पढ़ाई ऐसी है तो घर बैठे भी पढ़े ,रास्ते में पढ़े। जहां चाहो वहां बैठे याद करो। गायन भी है ना। सिमर3 सुख पाओ। कल–कलेश मिटे सब तन के सो मन के। मन के सो तन के। वह जीवनमुक्ति पद पावे। परिचय मिला। अब उनको याद करना है। जो बाप को पहचानते ही नहीं तो याद कैसे करेंगे? कितनी छोटी2 बातें हैं। फिर भी भूल जाते हैं। बाप कितना सिम्पल बात बताते हैं। अच्छी बुद्धि है तो वर्सा अच्छा पा सकते हैं। रहते भी हैं, सेवा भी यज्ञ की करते हैं। तुम चलते–फिरते याद की यात्रा पर रहते हो। इसमें पण्डे की भी दरकार नहीं। कहां भी बैठे याद में रह सकते हो। फिर पढ़ाई पर मार्क्स होती है। दुनियां में सब हैं मानव मत। श्रीमत तो किसको मिलती नहीं है। मनुष्य2 को मत वर्सा नहीं दे सकते हैं। वर्सा बाप ही देते हैं। बेहद का बाप। बेहद का वर्सा। बेहद की खुशी रहती है। जितना अच्छी रीत याद में रहेंगे उतना अच्छा वर्सा मिलेगा। वह सब हैं भक्तिमार्ग के गुरू। ज्ञान मार्ग का सदगुरू तो एक ही है। वह ही पतित–पावन है। बाकी सभी हैं भक्ति मार्ग के। यह प्वाइंट अच्छी तरह नोट कर दो। अनेक है भक्तिमार्ग के गुरू। भक्ति माना दुर्गति। सीढ़ी उतरनी ही पड़ती है। ज्ञान बिगर गति तो हो नहीं सकती। बाप ही आय सेकेंड में गति सदगति देते हैं। पोप आदि भी गॉड को याद करते हैं ;क्योंकि उनके बिगर शांति कोई कर न सके। भल करके कहेंगे हम कोशिश करते हैं शांति करने लिए। यह तो सिर्फ एक लड़ाई को बंद करने लिए करते हैं ;परंतु यहां तो कितना झगड़ा है। महाभारत लड़ाई लगी थी उस समय जरूर भगवान भी होगा। जो नई दुनिया स्थापन करना है। रुहनी बाप तुमको रुहानी यात्रा की तैयारी करा रहे हैं। यह रुहानी यात्रा एक ही बार होती है। जिस्मानी यात्रायें तो आधा कल्प चलती हैं। अभी तुमको रुहानी यात्रा सिखलाई जाती है। फिर दोनों बंद हो जावेंगे। अच्छा, मीठे2 रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप व दादा यादप्यार गुडनाइट। रुहानी बच्चों को नमस्ते। नमस्ते। ओमशांति।